

रक्तपित्त, कोठ अने व्याधिग्रस्त बीमारीओथी बचवानी दुआ

- «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَالْهَرَمِ وَالْقَسْوَةِ، وَالْغَفْلَةِ، وَالْعَيْلَةِ وَالذَّلَّةِ وَالْمُسْكَنَةِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الصَّمَمِ وَالْبَكَمِ وَالْجُنُونِ، وَالْجُدَامِ، وَالْبَرَصِ، وَسَيِّئِ الْأَسْقَامِ»

अर्थात्, “हे अल्लाह ! हुं लायारी, सुस्ती, कायरता, कंजूसी, घडपण, कठोरता, गफ़लत अने बेदरकारी, अपमान तेमज लूभ-तरसथी तारुं शरष मागुं छुं अने बहेरापणुं, गूंगापणुं, गांडपण, रक्तपित्त अने कोठ, कुष्ठरोग अने तमाम व्याधिग्रस्त बीमारीओथी हुं तारुं शरष मागुं छुं.” (अबू दाउद, तिरमिजी)

- «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبَرَصِ، وَالْجُنُونِ، وَالْجُدَامِ، وَسَيِّئِ الْأَسْقَامِ (أَبُو دَاوُد)

अर्थात्, “हे अल्लाह ! हुं कुष्ठरोग, गांडपण, रक्तपित्त अने कोठ, अने येपी रोगोथी तारुं शरष मागुं छुं.” (अबू दाउद)